उमेश महादोषी

रसारोहण

ई-मेल-umeshmahadoshi@gmail.com

बच्चे के सौंदर्य से अभिभूत नर्स ने उसको पुचकारते हुए पलंग पर लेटी कुसुम को सौंपा, "लीजिए मैम, सम्हालिए अपने सलौने राजकुमार को। देखिए, कितना सुन्दर है, बिल्कुल आपकी तरह!"

हल्की मुस्कराहट के साथ कुसुम ने बच्चे को गोद में लेकर एक पल के लिए दुलारा। अगले ही पल हृदय में धधक उठी ज्वाला उसकी आँखों में उतर आयी। गोद में उठाये अपने पुत्र को वह घूरने लगी। ...उसने पिताजी को यही तो कहा था, "मेरी शादी की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है आपको। मैंने अपना जीवन-साथी चुन लिया है।" "क्या...?" एक पल के लिए पिताजी भौंचक हुए फिर आक्रोश में भरकर उबल पड़े, "बेशर्म लड़की! क्या तूने सारी मान-मर्यादा बेच खायी है? क्या यही संस्कार दिए हैं मैंने तुझे?" घर में मानो तूफान आ गया था। माँ ने अपने तरीके से समझाने का प्रयास किया तो पिताजी अपने तथाकथित संस्कारों के टीले पर खड़े होकर चीखने लगे। जब वह कैसे भी अपने निर्णय से पीछे हटने को तैयार नहीं हुई तो जाति और गैर-बराबरी के पंच और रवि की बेरोजगारी पर तंज के वार किए गये। वह भी कहाँ रोक पायी थी स्वयं को। उसने भी उतने ही तीखे तंज का वार किया था, "भाई को दिए संस्कार भी याद हैं न आपको? उसने भी तो अपने जीवन-साथी का चयन स्वयं ही किया था। और भी बहुत-कुछ है, जिसे याद दिलाया जा सकता है। बेटे के सामने तो हर बार आप बड़ी आसानी से समर्पण करते रहे..."

सामने खड़े रवि पर दृष्टि पड़ते ही उसकी गोद में बच्चे को लगभग फेंकते हुए चीखी कुसुम, "लो, सम्हाल सकते हो तो सम्हालो अपने बेटे को, नहीं तो अभी के अभी फेंक दो इसे कचरे के डिब्बे में। मुझे नहीं चाहिए संस्कारवान बेटा!"

"आखिर इसे हुआ क्या...?" रवि और परिवार के सभी लोग एक-दूसरे का मुँह देख रहे थे।

कला का चेहरा

उमेश महादोषी

पिछले कई महीने से फेसबुक पर इस युगल का फिल्मी गीत-गायन सुन रहा हूँ। पेशेवर तो नहीं ही है यह युगल। हाँ, कुछ ठीक-ठाक गा लेता है। इतना ठीक कि उनके सामान्य श्रोता सुनकर खुश हो जाते हैं। ऐसे श्रोताओं को गायन और संगीत की बहुत समझ तो होती नहीं है; हाँ, मूल गायन से तुलना करके अपनी समझ का सिर अवश्य सहला लेते हैं। मैं भी एक ऐसा ही श्रोता हूँ। इसीलिए कह रहा हूँ काफी-कुछ अच्छा गा लेता है यह युगल। गायक-गायिका आपस में संबंधी हैं, मित्र हैं या कुछ और; नहीं मालूम। किन्तु दोनों का पारस्परिक सामंजस्य आकर्षित करने वाला है। वे डूब जाते हैं गायन में, गायन गीत में और गीत... ! पता नहीं श्रोताओं को क्या अच्छा लगता है! ...गायन, गीत या कुछ और! मेरा ध्यान आज ही इस 'कुछ और' की ओर गया है। आज इन दोनों के पारस्परिक सामंजस्य में उतराता दिखाई दे रहा है, यह 'कुछ और'! साफ दिखता है कि गायिका गायक के चेहरे में बार-बार डूब जाना चाहती है, किन्तु गायक...? उसके मंद हास में भी एक गहरा तनाव-सा है, मंच से हिले बिना ही मानो वह रस्सी तोड़कर भाग जाना चाहता हो। रस्सी...? आप कहेंगे, कला क्या कोई रस्सी है? मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ; किन्तु अक्सर कलाकार के हाथों पर, कमर और गर्दन पर जो निशान दिखाई देते हैं, वो किस चीज के होते हैं?

स्मृतिशेष

जैसे ही वह पुस्तक मेरे हाथ में आयी, मैंने उसे खोला। खोलते ही जो पृष्ठ मेरे सामने था, वह समर्पण का पृष्ठ था। उसके शब्दों को सुनने की कोशिश की तो कुछ इस तरह बोलता सुनाई दिया वह पृष्ठ—

'उन मित्रों की स्मृति में, जो ऐसे वादे करते हैं जिनके बारे में वे स्वयं जानते हैं—नहीं करना है पूरा उन्हें; और मैं भी जानता हूँ, नहीं करना है शामिल ऐसे सहृदयों को अपनी मित्र सूची में।'

मैंने पुस्तक को आगे पढ़ने की बजाय, लेखक को फोन लगा दिया। बधाई दी उन्हें अद्भुत समर्पण पृष्ठ के लिए। लेखक महोदय पहले तो हँसे, फिर बधाई के लिए आभार व्यक्त किया; और अंत में पारंपरिक प्रश्न... "और किताब...?"

"किताब पढ़ने का वादा मैं नहीं करता।" मैंने कहा।

"क्यों..."

"स्मृतिशेष नहीं होना चाहता अभी मैं!"

और दोनों हँस पड़े ठट्ठा मारकर।